Rt. Rev. Patras Minj, S.J.
Bishop of Ambikapur

"मैं बलिदान नहीं, बल्कि दया चाहता हूँ" (मत्ती 9:13)
"अपने स्वर्गिक पिता–जैसे दयालु बनो" (लूक 6:36)

BISHOP'S HOUSE AMBIKAPUR
P.O. Funduldihari - 497110 Ambikapur
Dist. - Surguja (Chhattisgarh)
INDIA
Tel. (07774) (P)321162, 231032, 230063
Fax (07774) 230973

चालीसे का धर्म–पत्र : 2016

ईश्वर की कृपा और संत पिता की अनुमति से
अम्बिकापुर के धर्माध्यक्ष
अम्बिकापुर धर्म–प्रदेश

अति आदरणीय पुरोहितों, धर्मसंघियों, एवम् आप मेरे सभी प्यारे ख्रीस्त विश्वासियों को
मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ, आशीर्वाद एवं जय येसु !

करुणा व दया की पवित्र जयन्ती वर्ष 2015–2016 के लिए सन्त पिता फ्राँसिस ने अपने ही स्वर्गिक पिता की दयालुता को हमारे चिन्तन के लिए पवित्र नींव मानी है जो हम सन्त लूकस रचित सुसमाचार में पाते हैं "अपने स्वर्गिक पिता–जैसे दयालु बनो"(लूक 6:36)। किन्तु चालीसा के पत्र में उन्होंने माँ मरियम को एक मजबूत एवं अद्वितीय आधार बनाकर इस पुण्य समय को10 फरवरी राखबुध से 20 मार्च खजूर पर्व अर्थात् प्रभु येसु के दुःखभोग रविवार तक विश्वव्यापी कलीसिया के पवित्रीकरण के हित प्रदान किया है। ईश्वर की चुनी हुई जाति इस्राएलियों ने यहोवा के साथ अटूट समझौते के विरूद्व घोर अपराध किए हैं। होशेया के ग्रंथ में (अध्याय 6:6) से "मैं बलिदान नहीं, बल्कि दया चाहता हूँ" इस चुनौतीपूर्ण संदेश को उन्होंने जयन्ती मार्ग पर तीन भागों में विविध। दयालुता के कार्यों के रूप में जिक्र किया है।

(01) निष्कलंक कुँवारी माँ मरियम कलीसिया की तस्वीर पवित्रीकरण को प्रशस्त करती है।
(02) ईश्वर और मानव के बीच समझौता : दया व करूणा की लम्बी कथा।
(03) दयालुता के कार्य।

चालीसा एक पुण्य काल है। एक महत्त्वपूर्ण समय है। अपने परिपत्र में सन्त पिता हमें पवित्र सलाह देते हैं कि इस काल की गरिमा एवं पवित्रता को हम बनाये रखें। इसे यों ही बरबाद या नष्ट होने न दें। हमारे मनपरिवर्त्तन और शुद्विकरण के कार्यों में हम माँ मरियम की विचवई मांगें। मानव मुक्ति कार्य को संभव बनाने में ईश्वर ने माँ मरियम को ही चुना। उन्हें एक शक्तिशाली और अचूक माध्यम बनाया।

(01) निष्कलंक कुँवारी माँ मरियम कलीसिया की तस्वीर पवित्रीकरण को प्रशस्त करती है :

ईश्वर की दयालुता को जोश और उमंग के साथ जीने और अनुभव करने के लिए चालीसा एक ईश प्रदत्त वरदान है। ईश्वर ने माँ मरियम को ईश्वर की माँ बनने को चुना। उन्हें निष्कलंक बनाया। उनके गर्भ को ईश्वर का निवास बनाया। उन्होंने प्रभु वचन को ध्यान से सुना। उनपर चिन्तन किया। विश्वास किया। वह हर मानव के लिए आदर्श बनती हैं। इन्हीं की भाँति प्रत्येक विश्वासी को प्रभु के वचनों को सुनना और अनुसरण करना है। उन्होंने मुक्तिदाता को जन्म दिया। इस प्रकार मानव के लिए मुक्ति का द्वार खोल दिया।
मरियम ईश्वर की दयालुता का बखान करती हैं। वह योसेफ से पारिवारिक जीवन का आदर्श रखकर कलीसिया का रूप देती हैं। येसु मसीह में कलीसिया को पवित्र बनाती हैं क्योंकि वह कुँवारी और निष्कलंक है।

(02) ईश्वर और मानव के बीच समझौता : दया व करूणा की लम्बी कथा।

ईश्वर की अपार दयालुता और करूणा ईश्वर और मानव के बीच का रहस्यपूर्ण रिश्ता में झलकता है। इस रिश्ते में दरार आते हैं। मानव पवित्र रिश्ते को भंग कर देता। लेकिन मानव के क्रूर अविश्वास के बावजूद ईश्वर अपने वचन के प्रति ईमानदार और बफादार बना रहा। वह दयालु,सहनशील,सम्वेदनशील और ईमानदार बना रहा। इस प्रकार ईश्वर विश्वासघाती पिता, पति तथा वर बना और चुनी हुई इस्राएली प्रजा अविश्वासी संतान, पत्नी तथा वधु बनी। इतना होते हुए भी ईश्वर की दया मानव से कभी नहीं टली (होशेया 1–2, मत्ती 24:35)। ईश्वर का अपार प्रेम और अनन्त दया कलवारी के क्रूस तक पहुँची। वर का अपनी वधु के साथ का अटूट संबंध अनन्त विवाह भोज में परिलक्षित हुआ।

प्रेरितों की शिक्षा एवं साक्षी में दैवी करूणा सर्वोत्तम स्थान रखती है। ईश्वरीय प्रेम ने ही खीस्त को इस धरा में ले आया जिसने अपना सर्वस्व मानव मुक्ति के लिए ईश्वर पिता को कलवारी पर समर्पित कर दिया। ईश्वरीय करूणा हमें अपनी ओर उन्मुख होने और मनपरिवर्त्तन के लिए मार्ग तैयार करती है। क्रूसित प्रभु पापी को हृदय परिवर्त्तन की कृपा प्रदान करता और निरन्तर अपने पास ले आता है। इस प्रकार पूर्ण पवित्रता का जीवन प्रारम्भ करता है (एजे. 36:25–27)।

(03) दयालुता के कार्य:

ईश्वर की कृपालुता मानव में अभूतपूर्व परिवर्त्तन ले आती है। कठोर हृदय को भी मोम की तरह पिघला सकती है। दैवी करूणा में आत्मिक और शारीरिक शक्ति मौजूद है जो दया के कार्यों से पड़ोसी में बदलाहट ला सकती और जीवन में हरियाली ले आती है। इसलिए सन्त पिता फ्राँसिस इन कार्यों के प्रति हमें प्रोत्साहित करते हैंताकि निर्धन सुसमाचारी मूल्यों में दया का अनुभव करें। आज भी असंख्य पीड़ित वेदना में मदद के लिए कराह रहे हैं मानो फिराऊन की गुलामी में तड़प रहे हों। मूसा नबी की राह देख रहे हैं(नि.ग्रं. 3:7–10)। खीस्त के घायल, छेदित एवं रक्तरंजित शरीर को देखें, अनुभव करें कि मुक्तिदाता ने उनके कारण कितना कष्ट झेला है ताकि उनके प्रति उदार बनें।

गरीब अपनी दयनीयता देख सकें और निर्धनता में भी अच्छाईयों को पहचान सकें। वाकये में, जो अज्ञानता के कारण पाप की स्थिति में रहते हैं वे ही सबसे निर्धन हैं। अमीर अपने धन सम्पति के घमंड में(लूक 16:20–21) भिखारी लाजरुस को पहचान नहीं पाते। निर्धन लाजरुस येसु मसीह का प्रतीक है जो हमारे लिए मनपरिवर्त्तन की प्रेरणा के सुअवसर हैं किन्तु एक अमीर अहंकारी धन के घमंड में बुरी आत्मा के वशीभूत सोचता है "तुम ईश्वर के सदृश बन जाओगे"(उ.ग्रं. 3:5)। इस तरह वे विनाश के रास्ते से निकल नहीं पाते।

इस जयन्ती वर्ष के चालीसा में सन्त पिता लिखते हैं यह अत्यन्त उपयुक्त समय है कि हम ईश्वर के वचन को ध्यान से पढ़ें, सुनें, मनन–चिंतन करें और दया तथा करूणा के कार्यों में जुट जायें। शारीरिक कार्यों में हम येसु के घायल शरीर का ही स्पर्श करते हैं जो भूखे, प्यासे, नंगे, गुमराह, रोगी, बंदी, मुर्दे (मत्ती 25 : 31–40, 41–45) हैं उनकी सेवा करें।

कुछ आध्यात्मिक रूप से मानसिक प्रताड़ना सहते हों,गलतफहमी में पड़े हों, अज्ञानता के वशीभूत हों,गम्भीर पापों में पड़े हों, कई तरह से दुःखित और पीड़ित हैं, क्षमा और सान्त्वना के लिए तरस रहे हैं, हतोत्साह हैं, धैर्य खो बैठे हैं, उन्हें दिलासा की जरूरत है, इत्यादि। ऐसे अनेकों कार्य करने की जरूरत है क्योंकि इन सारे लोगों में येसु उपस्थित हैं। उनकी सेवा और मदद करने में चूक जाना मतलब प्रभु येसु खीस्त की ही सेवा में चूक जाना (मि.मु. MV 15)।

इन अभागा जनों की दयनीयता को देखते और जानते हुए भी यदि हमने अपने हृदय का द्वार उनके लिए नहीं खोला और हम घमंडी तथा अहंकारी अमीरों की तरह बने रहे तो हमें जलती आग के कुण्ड में मर मिटने की नौबत आयेगी। और हम उस वख्त अपने ईष्ठ–कुटुम्बों के लिए अर्जी करेंगे किन्तु ऐसा न हो कि उन अन्तिम क्षणों में इब्राहीम को यह कहना पड़े: 'मूसा और नबियों की पुस्तकें उनके पास हैं, वे उनकी सुनें' (लूक 16:29)।

अतः हम समुचित समय का सदुपयोग करें।

आइए, हम इस चालीसे के पुण्य काल को यों हि चूकने और बरबाद होने न दें। हम अपना ह्रदय द्वार जरूरतमंद के लिए खोल दें। प्रभु येसु ने अपनी प्यारी माँ को ही हमारी मुक्ति का साधन बनाया। हम उनकी विचवई मांगें। जिन्होंने अपने को इतना विनम्र बनाया। वह हमारी मदद करे! जय येसु। आपों को भरपूर प्रभु की आशिष!

प्रभु में आपों का ही सेवक,

09 फरवरी, 2016

+Pminj SJ

+पतरस मिंज, ये.स.

अम्बिकापर के धर्माध्यक्ष

BISHOP OF AMBIKAPUR

चालीसा संबंधी नियम (2016)

(01) मानव मुक्ति के लिए ईश पुत्र ईसा मसीह ने कठोर प्रायश्चित किया। पापों का बदला हमें चुकाना था। किन्तु 40 दिन और 40 रात तक तपस्या, उपवास और परहेज के द्वारा उन्होंने हमारे लिए पुण्य कमाया और मुक्ति का द्वार खोल दिया। इस पुण्य काल में हमें अपने पापों के लिए प्रायश्चित करना आवश्यक है।

(02) राखबुध और चालीसे के हर शुक्रवार दिन हमें उपवास और परहेज करने का हुक्म है।

(03) चौदह (14) साल के सभी काथलिकों को परहेज का हुक्म है। इक्कीस (21) से 60 वर्ष तक उपवास करने का हुक्म लागू है।

(04) प्रार्थना के विषय प्रभु कहते हैं : " ढोंगियों की तरह प्रार्थना नहीं करो। वे सभागृहों में और चौकों पर खड़ा होकर प्रार्थना करना पसन्द करते हैं जिससे लोग उन्हें देखें। मैं तुम लोगों से कहता हूँ– वे अपना पुरस्कार पा चुके हैं। जब तुम प्रार्थना करते हो, तो अपने कमरे में जाकर द्वार बन्द कर लो, और एकान्त में अपने पिता से प्रार्थना करो। तुम्हारा पिता, जो एकान्त को भी देखता है, तुम्हें पुरस्कार देगा" (मत्ती 6' :5–6)। अतः सारे ह्रदय से विश्वासपूर्वक हम प्रार्थना करें।

(05) उपवास के बारे प्रभु कहते है:– 16 " ढोंगियों की तरह मुँह उदास बनाकर उपवास नहीं करो। 17 जब तुम उपवास करते हो, तो अपने सिर में तेल लगाओ और अपना मुँह धो लो, जिससे लोगों को नहीं, केवल तुम्हारे पिता को, जो अदृश्य है, यह पता चले कि तुम उपवास कर रहे हो। तुम्हारा पिता, जो अदृश्य को भी देखता है, वह तुम्हें पुरस्कार देगा" (मत्ती 6' 15–18)। निष्कपट ह्रदय से हम उपवास करें।

(06) उपवास के बारे नबी इसायस का परामर्श (इसा. 58 : 3–14) कितना सटीक और प्रभावशाली है। हम चिंतन करें।

3 " हम उपवास क्यों करते हैं, जब तू देखता भी नहीं ? हम तपस्या क्यों करते है जब तू ध्यान भी नहीं देता।
देखो, उपवास के दिनों में तुम अपना कारबार करते और अपने सब मजदूरों से कठोर परिश्रम लेते हो।
4 तुम उपवास के दिनों लड़ाई झगड़ा और करारे मुक्के मारते हो। तुम आज कल जो उपवास करते हो उससे स्वर्ग में तुम्हारी सुनवाई नहीं होगी।
5 क्या मैं इस प्रकार का उपवास, ऐसी तपस्या का दिन चाहता हूँ जिसमें मनुष्य सरकण्डे की तरह अपना सिर झुकाये और टाट तथा राख पर लेट जाये ? क्या तुम इसे उपवास और ईश्वर का सुग्राहय दिवस कहते हो ?

6 मैं जो उपवास चाहता हूँ वह इस प्रकार है – अन्याय की बेड़ियों को तोड़ना, जूए के बंधन खोलना, पददलितों को मुक्त करना और हर प्रकार की गुलामी समाप्त करना।
7 अपनी रोटी भूखों के साथ खाना। बेघर दरिद्रों को अपने यहां ठहराना। जो नंगा है, उसे कपड़े पहनाना और अपने भाई से मुंह नहीं मोड़ना। तो ईश्वर की महिमा तुम्हारे पीछे–पीछे आती रहेगी।
10 यदि तुम भूखों को अपनी रोटी खिलाओगे और पददलितों को तृप्त करोगे तो अंधकार में तुम्हारी ज्योति का उदय होगा और तुम्हारा अंधकार दिन का प्रकाश बन जायेगा।
13 यदि तुम विश्राम दिवस का नियम भंग करना छोड़ दोगे और उस पावन दिवस को कारबार नहीं करोगे यदि तुम उसे आनन्द का दिन, प्रभु को अर्पित तथा प्रिय दिवस समझोगे, उस दिन अपना कारबार नहीं करोगे।
14 तो तुम्हें प्रभु का आनंद प्राप्त होगा। मैं तुम्हें हर तृप्ति प्रदान करूँगा " (इसा.58 : 3 – 14)।

(07) प्रभु पड़ोसी प्रेम की महत्ता पर बहुत जोर देते हैं। त्याग सिर्फ दिखावा मात्र के लिए नहीं। वास्तव में हृदय परिवर्तन की जरूरत है। अपने पड़ोसी के साथ सहृदयता और आत्मीयता का ब्यवहार चाहिए। पड़ोसी, कोई भी धर्मावलम्बी का क्यों न हो, किसी भी मझहब का क्यों न हो, उसकी जरूरत की पूर्त्ति में असल त्याग है। उनके लिए दु:ख कष्ट झेलने को तैयार रहना। आज त्याग, तपस्या और उपवास–परहेज का यही असल और वास्तविक अर्थ है।

(08) चालीसा के समय माँस, मछली, अण्डे का सेवन नहीं करें। अब से चालीसा में हमारे धर्मप्रान्त में ये पूर्णत: वर्जित रहेंगे।

(09) बुजुर्ग माता–पिता एवं बीमार ब्यक्ति डॉक्टरों की सलाह पर आवश्यकतानुसार इनका सेवन कर सकते हैं।

(10) यों ही मनोरंजन के लिए और शरीर की मांग के लिए नशा बिल्कुल वर्जित है।

(11) सुख–संतोष देने वाले मादक पदार्थ जैसे सिगरेट, पान, बीड़ी, गुड़ाखू, मदीरा व अन्य नशीली चीजें, सिनेमा, बच्चों के लिए जरूरत से ज्यादे टी.व्ही देखना इत्यादि बर्जित हों।

(12) चालीसा के अन्तर्गत पड़ने वाले दो बड़े त्यौहार 19 मार्च और 25 मार्च शालीनतापूर्वक मनाया जा सकता है। इस वर्ष यह महोत्सव सोमवार 04 अप्रैल 2016 को रखा गया है।

(13) उचित कारण से पल्ली पुरोहित अपने जिम्मे के किसी भी व्यक्ति या परिवार को उपवास और परहेज के हुक्म से मुक्त कर सकते हैं। अथवा उनके स्थान में कोई दूसरा पुण्य कार्य नियुक्त कर सकते हैं। पाप मोचक पुरोहित को यही अधिकार दिया जाता है। लेकिन यह केवल उसके प्रति जो उनके पास पापस्वीकार करने आते हैं।

(14) धर्ममण्डली की हुक्म के अनुसार पारका के समय योग्य रीति से परमप्रसाद लेना है। हमारे धर्मप्रदेश में यह समय राख बुध से लेकर पवित्र तृत्व रविवार दिन समाप्त होने तक रखा गया है।

(15) अनाथ बच्चों और गरीबों के लिए उदारतापूर्वक दान दें।

प्रभु ईश्वर आपको बहुत आशिष प्रदान करें। जय येसु !

BISHOP OF AMBIKAPUR

+ Minj SJ

09 फरवरी, 2016

+ पतरस मिंज, ये.सं.
अम्बिकापुर के धर्माध्यक्ष

नोट : पल्ली पुरोहितों तथा संस्था के अधिकारियों से अनुरोध है कि वे इस चालीसा संबंधी नियम को पाते ही पढ़कर सुनावें। धन्यवाद।